जैसे तैसे मैने एक महीना गुजारा और फिर ३ दिन की छुट्टी लेकर ससुराल की तरफ चल दिया. ससुराल पहुंचा तो बड़ी साली ने बताया कि अमिता कल ही वापस चली गई है, मेरे गांव से कोई उसे लेने आया था. मैने डरते डरते पुछ लिया, "कौन सुभाष?" उसने कहा, "नही कोई कुंदन था." मै कुंदन को जानता था मेरा पड़ोसी था और घरेलू सम्बंध थे, अम्मा भी मेरे इलावा किसी को भेजती तो कुंडन ही होता. मेरी जान मे जान आई, मै वापसी को हुआ तो उन लोगो ने मुझे जबरद्स्ती रोक लिया. रात मे आराम करके मै अगले दिन अपने घर पहुंचा. घर पहुंचते ही अम्मा से पूछा, "अम्मा अमिता को बुलाओ." अम्मा बोली, "अरे वो आई कहां है, तू लेने जायेगा उसको. मुझे काटो तो खून नही मैने पुछा, "कुंदन?" अम्मा बोली, "अरे उसके ससुर जी का देहांत हो गया है, वो वहीं गया है, अगले हफ्ते लौटेगा. वो होता तो उसी को भेज देती पर अभी बेटा तू ही चला जा." मै उलटे पैर घर से बाहर निकल गया. अमिता न यहां थी न मायके मे, तो थी कहां. सबसे पहला विचार सुभाष का आया सो बस पकड़ कर सुभाष के गांव चल दिया. शाम ढलते ढलते मै सुभाष के गांव पहुंच गया. सुभाष के घर मे घुसा तो देखा सामने सुभाष कुछ लोगो के साथ बैठा हुआ है. नाश्ता परोसा हुआ था और सब नाश्ता कर रहे थे. सुभाष मुझे गुस्से से देख रहा था, मै उसके पास पहुंचा और बोला, "सुभाष भईया, दो मिनट सुनो थोड़ा बात करना है." सुभाष मुझे घूर के देखने लगा और फिर बोला, "चलो!" हम दोनो एक कोने मे चले गये. सुभाष ने कहा, "बोल क्या बात करना है?" मैने पुछा, "सुभाष भईया, अमिता यहां है क्या?" उसने मुझे घूरा और कहा, "यहां क्यो होगी?" मैने डरते डरते उससे कहा, "पिछले महीने आप उसे मेरे घर से ले आये थे और ५ दिन बाद उसे उसके मायके छोड़ने गये थे." वो मुस्कुराया और बोला, "अबे तो उस टाईम हमने उसे अच्छे से इस्तेमाल नही किया था, मेरे दोस्तो ने भी जिद की थी तो ले आया था. ५ दिन मे जी भर के उसकी जवानी का रस पी लिए थे और फिर पहुंचा दिया था उसे उसके घर. क्यों तेरी लुगाई ने नही बताया." मैने धीरे से कहा, "हमारी बात नही हो पाई है अभी तक." सुभाष बोला, "वो यहां नही है, चल अब निकल यहां से, मेरे घर पार्टी चल रही है. मेरे खास ग्राहक लोग है जो मुझे अच्छा बिजनेस देते है. अभी मेरे मूड खराब मत कर और निकल यहां से."

तभी एक आदमी जो हमारे बिल्कुल पास आ गया था बोला, "कौन है ये भाई साहब सुभाष?" सुभाष हड़बड़ा कर बोला, "दोस्त है पुराना?" वो बोला, "तो इन्हे भी पार्टी मे शामिल करो भई, इन्हे भी जन्नत घुमाओ." मैने धीरे से कहा, "नही मै चलुंगा अब." उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे जबरद्स्ती खींचते हुए सोफा तक ले गया. सोफे पर और चार लोग बैठे थे, सबकी उमर ३० से उपर ही थी. जाते हुए बोला, "सुभाष के दोस्त हमारे दोस्त, इतनी जल्दी नही जाने देंगे, सुभाष के पार्टी के जल्वे दिखाये बिना." मैने सुभाष की तरफ देखा तो उसने बुरा सा मुंह बनाया, शायद उसे मेरा रूकना अच्छा नही लगा. उस आदमी ने भी शायद ये देख लिया था सो वो सुभाष से बोला, "माफ करना सुभाष भाई आपसे बिना पूछे हमने मेहमान बढ़ा दिया, आपको बुरा तो नही लगा. अगर लगा होगा तो हम सब इनको लेकर कही और पार्टी

कर लेते है." सुभाष का चेहरा और सुर दोनो बदल गया और वो उन सबकी खुशामद करने लगा. इतना तो मुझे अंदाजा हो गया था कि सब के सब शराब पीये हुए थे. तभी एक ने कहा, "अरे सुभाष भाई, अपनी छमिया को तो बुलाओ, थोड़ा ड्रिंक मंगवाओ." सुभाष मेरी तरफ देख कर बोला, "ये मेरा दोस्त चला जाता है तब बुलववाता हूं." उस आदमी ने कहा, "जब पार्टी मे शामिल किये है तो पूरा पार्टी दिखाएगे. बुलाओ." सुभाष उठ कर अंदर चला गया और थोड़े देर मे एक लड़की ड्रिंक का ट्रे लेकर अंदर आई. लड़की दूर से ही दिख गई थी पर जिस ऐगल पर मै बैठा था वहां से चेहरा नही दिख रहा था. एक झलक मे ही पता चल गया था कि वो बिल्कुल नंगी थी. वो आई तो मेरे होश उड़ गये, अमिता ही थी. उसने मुझे देखा पर चेहरे से ये नही दिखाया कि मुझे जानती है. मैने सुभाष की तरफ देखा कि झूठ पकड़ाने पर उसका चेहरा कैसा दिखता है. वो मुझे देख कर मुस्कुरा रहा था. मुझे गुस्सा तो बहुत आ रहा था पर मै चुप रहा. अमिता एक एक करके सबके सामने ट्रे ले जाने लगी और सब एक एक करके ग्लास उठाने लगे. ग्लास उठाने के साथ साथ हर कोई उसके जिस्म के किसी न किसी हिस्से को सहला देता था. आखिर मे अमिता मेरे सामने आई, मुझसे नजरे नही मिला रही थी, मैने चुपचाप एक ग्लास उठा लिया. अमिता मुड़ी और वापस चली गई. सबने एक घूंट मे ड्रिंक खत्म किया और एक ने कहा, "किचन की तरफ ही गई है न वो आईटम." सुभाष ने सर हिला दिया. वो बोला, "अच्छा तो मै एक राऊंड निपटा कर आता हूं, चलो रस्तोगी साहब." रस्तोगी नाम के आदमी ने कहा, "अरे तुम सिन्हा को ले जाओ. मै और पटेल पिछले महीने आये थे. रात भर हम दोनो ने साली को कथ्थक करवाया था." मैने फिर सुभाष कि तरफ देखा और फिर वो मुस्कुराने लगा. वो आदमी बोला, "तो पीस है कैसा?" रस्तोगी बोला, "कमाल का चुत है यार, रंडी कम और नई नवेली दुल्हन ज्यादा लगती है, पिछली बार तो पूरे हाथो और पैरो मे मेंहंदी लगी थी." दूसरा बोला, "तो सुभाष का क्या भरोसा, नई नवेली दुल्हन को ही परोस रहा हो." वो आदमी सुभाष की तरफ देख कर बोला, "कुछ करने की मनाही तो नही है न?" सुभाष पट से बोला, "कैसी बात करते है सिंह साहब, जैसे चाहे इस्तेमाल किजीए, जहां डालना होगा डाल दिजिएगा." उस आदमी ने एक आदमी से कहा, "चलो सिन्हा साहब एक छोटा राऊंड मार कर आते है किचन से." दोनो तेज कदमो से एक तरफ चले गये. बाकि तीनो भी उठ गये और बोले, "सुभाष हम लोग भी आराम कर लेते हैं. ये साहब को सुबह तक रोक लो, हम इनसे सुबह बात करेंगे." इनता बोल कर तीनो उपर चले गये.

अब मै और सुभाष ही रह गये बस, मै गुस्से मे था पर उसके घर मे उसके गांव मे था सो मैने गुस्से को दबा कर सुभाष से पुछा, "पिछले महीने मुझे लगा, तुम और तुम्हारे २ दोस्त ही अमिता के साथ थे

५ दिन." सुभाष ने कुछ नही कहा तो मैने धीरे से पुछा, "कितने लोगो उसके बदन से खेले है, पिछले महीने जब वो ५ दिन के लिये यहां थी." सुभाष ने धीरे से कहा, "बारह, कितनी बार ये मत पूछना, मुझे याद नही." सुभाष बोला, "अब तू ये पुछेगा कि मै पिछले महीने तिक्कड़म भिड़ा कर क्यो लाया था उसे तो मै खुद ही बता देता. जब बस मे मैने उसकी चुदाई की थी तो मेरा मन आ गया था उसपर, इत्मिनान से उसके बदन से खेलना चाहता था इसलिए तुम दोनो को यहां ले आया. पर ऐन टाईम पर मेरे दोनो दोस्त पहुंच गये और मुझे मजबूरी मे अमिता को रात भर उनके साथ बांटना पड़ा. इस लिए तुम्हारे घर से ले आया, तुम्हारे ससुराल छोड़ने के बहाने. पहले दिन तो अच्छे से उसके बदन से खेला, फिर सोचा कि ३ – ४ दिन मे छोड़ कर आ जाऊंगा उसे. और ३ - ४ दिन रख लेता हूं अपने पास." सुभाष कुछ पलो के लिए रूका, दारू की घूंट मारी और आगे बोला, "अब ३ - ४ दिन फाल्तू मे अपने मनोरंजन के लिए इतने मस्त माल को रखूं. जिस लड़की के साथ मुझे इतना मजा आया वो तो किसी को भी जन्नत की सैर करा सकती है. सो मैने अपने बिजनेस के टॉप के ग्राहको को बुलवा कर उसके बदन से खेलने दिया. बीच मे मै भी इतमिनान से अमिता के बदन से जवानी चूसता रहा." मैने कहा, "तो फिर इस बार क्यों ले आये उसे, आपने तो मन भर खेल लिया था उसके साथ." सुभाष बोला, "अरे तो ये पांचो अचानक आने वाले थे, कोई और लड़की मिल नही रही थी सो अमिता को लिवा लाया." मैने कहा, "और कितने दिन रखोगे उसे यहां?" उसने कहा, "कल सुबह ये सब चले जायेंगे. ले जाना दोपहर तक उसे."

तभी एक तरफ से दोनो आदमी अमिता को लेकर आ गये, तीनो नंगे थे और एक अमिता के कमर मे हाथ डाले हुए था. आते ही सुभाष से बोला, "क्या मस्त चीज है सुभाष भाई, चुत और गांड बराबर है बिल्कुल. हमने दोनो तरफ से बजा कर देखा है अभी, दिल और लण्ड दोनो खुश हो गया है. लो सम्भालो अपनी अमानत. हम चले सोने." ये कह कर उसने अमिता को सुभाष के जांघो पर बैठा दिया. दोनो निकल गये तो सुभाष ने अमिता को खड़ा किया और कमर मे हाथ डाल कर अपने कमरे की तरफ ले जाने लगा. मै भी पीछे हो लिया. उसने अपने कमरे का दरवाजा खोला तो पता चला कि बाकि तीनो यहीं थे. सुभाष बोला, "रस्तोगी साहब, फिर से आपकी खिदमत के लिए अमिता को लेकर आया हूं. आप तीनो रात भर इसकी जवानी का और इसके बदन का मजा लिजिए, मै सुबह मिलता हूं आप लोगो से." इतना बोल कर वो बाहर निकल गया और कमरे का दरवाजा भिड़ा दिया. कुछ पलो बाद अंदर से चिटकनी लगाने की आवाज आई. सुभाष मुझे बोला, "चल तेरे को भी एक कमरा दिखा देता हूं और मुझे एक आरामदायक कमरे मे छोड़ कर निकल गया.

जिस आदमी एक महीने पहले शादी हुई हो उसकी वाईफ बगल के कमरे मे तीन लोगो के साथ हो, और वो तीनो उसके बदन से खेल रहे हो, कितना भी आरामदेह बिस्तर हो नीन्द आ सकती है क्या भला. मै

रात भर इधर उधर करता रहा और सुबह ४ बजे हाल मे आकर सोफे पर बैठ गया. जिस सोफे पर बैठा था उससे सुभाष के रूम का गेट सीधे दिखता था. मै यही सोच रहा था कि तीनो अमिता के बदन से खेल कर सो रहे होंगे जब अचानक दरवाजा खुला और उनमे से एक बाहर निकला और बाथरूम की तरफ चल दिया. जाते हुए उसने दरवाजा नही भिड़ाया. अंदर अमिता बैड के नीचे खड़ी थी और अपने दोनो हाथ बैड पर रख कर झुकी हुई थी. रस्तोगी उसके गांड मे अपना लण्ड घुसाया हुआ था और धक्के लगाये जा रहा था. बैड पर एक आदमी अमिता की तरफ मुंह करके बैठा हुआ था. वो दोनो हाथों से अमिता के स्तनो को मसल रहा था. कुछ देर बाद वो आदमी पेशाब करके वापस आ गया और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया.

इसके बाद दरवाजा आठ बजे ही खुला. नाश्ता टेबल पर लग चुका था और सब एक एक करके नाश्ते के टेबल पर आकर बैठ गये. रस्तोगी ने मुझे भी नाश्ते के टेबल पर बैठा दिया. अमिता भी फ्रेश होकर आ गई पर कपड़े उसने अभी भी नही पहना था. सुभाष ने सब से पुछा कि रात मे मजा किये या नही और सबने कहा कि बहुत मजा आया. सुभाष ने अमिता को खींच कर बगल के एक टेबल पर लिटा दिया और अपनी पैंट सरका कर उसने अमिता के चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया और तेज झटके लगाने लगा. रस्तोगी बोला, "क्या कर रहे हो सुभाष भाई?" सुभाष धक्के रोक कर बोला, "आप लोग जैसे नाश्ता कर रहे है मै भी नाश्ता कर रहा हूं." इतना कह कर सब नाश्ते मे लग गये और सुभाष चोदने मे. नाश्ता खत्म करते करते सुभाष का नाश्ता भी खत्म हो गया और अमिता अंदर चली गई. सब जाने की तैयारी करने लगे. रस्तोगी ने मुझे साईड मे बुलाया और मुझसे मेरा नम्बर मांगा. मैने नम्बर दिया तो उसने अपने मोबाईल मे उसे सेव कर लिया और मुझे एक तरफ ले गया. फिर बोला, "कुछ बड़ी कमाई करना चाहोगे." मैने पुछा, "मतलब?" उसने कहा, "मतलब दो दिन का इतना जितना साल भर मे नही कमा सकते." मैने कहा, "कैसे?" उसने कहा, "इस माल को जिसको हमने रात मे बजाया उसे लेकर अगले महीने मेरे बंगले पर आ जाना. मै और मेरे ५-६ दोस्त होंगे वहां. इसे दो दिन के लिए वहां छोड़ देना, हम सभी दोस्त दो दिन तक इसके बदन से खेलेंगे और दो दिन बाद आकर इसे और जितना साल भर मे कमाते हो उसका दुगना मुझसे ले जाना." मैने कहा, "मै उसे कैसे ला सकता हूं." मैने पल्ला झाड़ने की कोशिश की तो रस्तोगी ने कहा, "तेरी बीवी है तो तू हे ला सकता है न." मैने अपनी हड़बड़ाहट को दबाते हुए कहा, "ये आप क्या कह रहे हैं." उसने कहा, "बेटे हमने भी बहुत दुनिया देखी है, है तो वो तेरी बीवी ही, अच्छा चांस दे रहा हूं कमाई का, वरना अभी तो तेरी बीवी के बदन की कमाई कोई और खा रहा है. इस बारे मे सोचना और मेरा कार्ड रख." ये कह कर उसने मुझे अपना कार्ड दिया. हम वापस आ गये और वो लोग वहां से निकल गये.

सुभाष ने मुझे अंदर बुलाया. अमिता पास ही चादर लपेट कर खड़ी थी. उसने मुझसे कहा, "तो यहां से शहर जाओगे." मैने सर हिला दिया. उसने कहा, "हो सकता है कि मेरे और मेरे दोनो बिजनेस पार्टनर का तेरे शहर का दौरा हो. जब आयेगे तो तेरे को फोन करेंगे, तू अमिता को सुबह हमारे होटल पहुंचा

देना और शाम को आकर ले जाना." मैने हाथ जोड़ कर कहा, "बस अब और अमिता को इस्तेमाल मत किजीए." सुभाष बोला, "अमिता मेरे रखैल की तरह है, मै जब चाहे और जैसे चाहे इसका इस्तेमाल करूंगा. नमूना दिखाता हूं तुझे." इतना कह कर उसने दरबान को आवाज दी. दरबान दौड़ता हुआ अंदर आया. उसने दरबान से पुछा, "तूने मेरी इतनी सेवा की है, आज तक मैने तुझे कोई इनाम दिया है." दरबान ने सर झुका लिया. उसने कहा, "मतलब नही दिया है." दरबान सर झुकाये रहा. उसने कहा, "हवेली मे और कौन कौन है अभी." दरबान ने तीन चार लोगो का नाम गिना दिया. सुभाष बोला, "आज सबको इनाम मिलेगा." उसने दरबान ने कहा, "ये मेम साहब कैसी दिखती है." दरबान ने धीरे से कहा, "अच्छी दिखती है साहब." सुभाष ने चादर खींच ली और कहा, "और अब." दरबान ने अमिता को उपर से नीचे तक देखा और कहा, "बहुत पटाखा है साहब." सुभाष बोला, "ले जा इसे अपने क्वाटर मे अभी, और बाकि नौकरो के साथ अपना अपना इनाम ले लो." दरबान को दोबारा नही बोलना पड़ा और वो अमिता को गोद मे उठा कर बाहर निकल गया. मैने कहा, "सुभाष भाई....." एक झापड़ पड़ा और सुभाष ने अपना मोबाईल निकाला. उसने मोबाईल मे एक क्लिप चला दी. क्लिप बस मे अमिता की चुदाई की पूरी रिकार्डिंग थी, जिसमे आवाज नही आ रही थी पर मै साफ दिख रहा था. क्लिप देखते समय सुभाष बोला, "देख कर ऐसा नही लग रहा कि तू खुद अपनी वाईफ को बस मे चुदवा रहा है? इसके इलावा अमिता जितने टाईम यहां रही है सब की विडियो रिकार्डिंग है, ज्यादा चूं चपड़ करेगा तो तेरे घर और ससुराल भेज दूंगा." मै कुछ देर तो बोल ही नही पाया फिर बोला, "सुभाष भाई, अमिता अच्छी लड़की है, उसे बरबाद मत करो." उसने कहा, "अच्छी लड़की, चल बस मे तो हमने फायदा उठा लिया पर जब तेरे घर से उसके मायके छोड़ने के बहाने से लेकर आया था तब मना भी तो कर सकती थी. और एक बात बता क्या वो कुंदन से नही मिली है?" मैने धीरे से कहा, "मिली है, वो जानती है कुंडन को अच्छे से." उसने आगे कहा, "तो जब कोई और आदमी कुंडन बन के उसके घर आया तो वो उसके साथ क्यो चली आई." मै कुछ बोल नही पाया. दरबान डेढ़ घण्टे मे अमिता के साथ वापस आया और मै उतनी देर सिर्फ बैठ कर सोचता रहा. सुभाष ने दरबान से पुछा, "सब को मजा आया." उसने कहा, "हां साहब बहुत मजा आया हम चारो को. रंडी जैसी लगती ही नही साहब बहुत टाईट चुत और गांड़ है, नई नवेली दुल्हन टाईप लगती है. पता तब चलता है साहब जब मुंह मे लेकर चूसती है. एकदम प्रोफेशनल रंडी की तरफ चूसती है." सुभाष मुझे देख कर मुस्कुरा रहा था. सुभाष ने कहा, "सुन बे, तलाक वलाक मत दे देना इसको, तेरे से सैटिंग जम गई है, तू मेरे रखैल का अच्छा ख्याल रखेगा और जब मेरे लण्ड को इसके चुत की जरूरत होगी तो तेरे पास से लिवा लाऊंगा. तलाक वलाक दे देगा तो इसके बाप से या इसके नये हस्बैंड से सेटिंग मे टाईम लग जायेगा. ऐसी कुछ गलत हरकत करेगा तो सीधा बस वाला क्लिप तेरे घर पहुंचेगा." उसके बाद सुभाष ने अमिता को कपड़े दिये और हम वहां से निकल कर घर आ गये और अगले दिन शहर वापस.

शहर आकर मुझे अमिता को छुने का बिलकुल मन नही करता था, इसलिए नही कि उसकी जवानी उतर गई थी, वैसे भी उसमे एक रत्ती भर का फर्क नही आया था. पर इसलिए कि अव्वल तो ३५-४० अलग अलग आदमियो ने उसका भरपूर इस्तेमाल किया था. उसे छूते ही मुझे किसी रंडी को छूने का एहसाह होता था. और दूसरा सुभाष ने जो मुझे परिस्थिति का विवरण दिया था उसके मै सहमत था, अमिता कुंडन को पहचानती थी तब किसी अंजान आदमी के साथ जो खुद को कुंदन बता रहा था, उसके साथ जाने का तुक नही बैठता. इसका मतलब वो जानती थी कि वो आदमी उसे सुभाष के पास ले जायेगा. एक महीने बाद एक दिन मैने अमिता से तैयार होने को कहा, और कहा कि हम लोग शहर से बाहर घूमने जा रहे है. वो तैयार हो गई और मै उसे लेकर रस्तोगी के शहर आ गया. मैने रस्तोगी को फोन करके उसके बंगले का एड्रेस लिया और हम उसके बंगले पर पहुंचे. रस्तोगी नही था सो हम हॉल मे सोफे पर बैठ गये. थोड़ी देर बाद रस्तोगी पहुंचा, रस्तोगी को देख कर अमिता खड़ी हो गई. रस्तोगी वहां आकर बैठ गया और मुझे एक पैकेट दिया. मैने उससे कहा, "रस्तोगी साहब मुझे आप अपने १०-१२ दोस्तो के नाम और नम्बर दे दिजीए." रस्तोगी ने पुछा, "क्यों?" मैने कहा, "सोच रहा हूं कि हर महीने अमिता के लिए ऐसे ही दो दिन का ट्रिप प्रोग्राम करूं. पति हूं न, तो जिस चीज मे इसे मजा आता है उसका इन्तेजाम जल्दी जल्दी कर दूं." रस्तोगी मुस्कुराया और बोला, "मेरे दोस्तो से बात कर लेता हूं फिर बताता हूं." मै उठ कर जाने लगा तो रस्तोगी बोला, "कहां चल दिये?" मैने कहा, "मै यहां नही रूकूंगा. पास मे हॉटल मे रूकूंगा. आप यहां अमिता के साथ ऐश करो, इसे अपनी रखैल समझ कर इस्तेमाल करना और जब मन भर जाये तो फोन करके बुला लेना मुझे." मैने और रस्तोगी दोनो ने अमिता की तरफ देखा, अमिता दो पल हमे देखती रही और फिर अपने कपड़े उतारने लगी. मै उसके नंगी होने से पहले ही बाहर निकल चुका था.